नई दिल्ली, मंगलवार, 2 सितम्बर, 2014

कारोबार

गैर कृषि क्षेत्र में 90 प्रतिशत हुई रोजगार की संख्या

छोटे व्यापारियों के लिए बने विशेष वित्तीय कार्पोरेशन: गुरुमूर्ति

नई दिल्ली, 1 सितंबर (एजेंसियां)। देश के पांच करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार मुहैया कराने वाले छोटे व्यापार क्षेत्र को सस्ता ऋण उपलब्ध कराने के लिए विशेष वित्तीय कॉर्पोरेशनों के गठन की जरुर बताई गई है। जानेमाने अर्थशास्त्री एस गुरुमूर्ति ने आज यहां जैर कॉर्पोरेट छोटे व्यापार के लिए औपचारिक फाइनेंस की मांग को लेकर गठित एक्शन समिति के राष्ट्रीय गोलमेज सम्मेलन में इस बात पर बल देते हुए कहा कि तथाकथित छोटे व्यापार से कुल पांच करोड़ 77 लाख लोगों की रोजी-रोटी चलती है।

> भारत की आर्थिक संस्कृति पश्चिमी देशों से बिल्कुल अलग है। इसलिए यहां पश्चिमी मॉडल सफल नहीं हो सकते। लेकिन दुख की बात है कि हमारे अर्थशास्त्री या नीति निर्माता इस बात से या तो अनभिज्ञ हैं या इसे स्वीकार नहीं करना चाहते।
>
> एस गुरुमूर्ति, अर्थशास्त्री

वह गैर कृषि क्षेत्र में रोजगाररत लोगों की संख्या का 90 प्रतिशत है। लेकिन जब इन छोटे व्यापारियों को कारोबार के लिए पैसे की जरूरत होती है तो बैंकों से उन्हें अपनी जरूरत का सिर्फ चार प्रतिशत ही मिल पाता है। शेष राशि के लिए उन्हें रिश्तेदारों, मित्रों और साहूकारों पर आश्रित रहना पड़ता है। ये साहूकार कर्ज तो समय पर दे देते हैं। लेकिन इसके बदले वे काफी ऊंची ब्याज वसूलते हैं। गुरुमूर्ति ने कहा कि इन व्यापारियों को सस्ता कर्ज उपलब्ध कराने के लिए विशेष वित्तीय कॉर्पोरेशन बनाने की जरूरत है जो वर्तमान बैंकिंग ढांचे से अलग हो। उन्होंने कहा कि देश में कई ऐसी संस्थाएं और धनाढ्य लोग हैं जो बीसियों साल से इन व्यापारियों को कर्ज दे रहे हैं। उनका पंजीकरण कर उन्हें वित्तीय कॉर्पोरेशनों में बदला जा सकता है। साथ ही डिपोजिट इन्श्योरेंस कॉर्पोरेशन का गठन किया जा सकता है ताकि उनका पैसा डूबने की आशंका न रहे। इससे वे कम दर पर भी कर्ज दे पाएंगे। गुरूमूर्ति ने कहा कि भारत की आर्थिक संस्कृति पश्चिमी देशों से बिल्कुल अलग है। इसलिए यहां पश्चिमी मॉडल सफल नहीं हो सकते। लेकिन दुख की बात है कि हमारे अर्थशास्त्री या नीति निर्माता इस बात से या तो अनभिज्ञ हैं या इसे स्वीकार नहीं करना चाहते। उन्होंने कहा कि यहां लोग शेयर, बाजार में पैसा लगाने में नहीं बैंकों में अपनी बचत जमा कराने में विश्वास रखते हैं। लेकिन बैंक देश के सबसे बड़े कारोबारी वर्ग को जो अपनी बचत उनके पास जमा कराते हैं। कारोबार के लिए पैसा देने में आनाकानी करते हैं। गुरुमूर्ति ने कहा कि बेसेल, तीन नियमों के लागू होने के बाद बैंकों के लिए असंगठित क्षेत्र के व्यापारियों को ऋण देना और मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि देश का व्यापार कहीं और से आता है तथा पैसा कहीं और जाता है। उन्होंने इस बात पर खुशी जाहिर की मोदी सरकार के पहले बजट में यह स्वीकार किया गया।